Date - 07/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

Observation Methods in psychopathology

प्रेक्षण विधि

(Observation Method)

असामान्य मनोविज्ञान अपने विषय-वस्तु (Subject matter) अर्थात् असामान्य व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए कई प्रविधियों का उपयोग करता है जिसमें से प्रेक्षण विधि (Obeservation method) एक प्रमुख प्रविधिहै। प्रेक्षण विधि सर्वाधिक पुरातन (Primitive) के साथ ही साथ एक आधुनिक शोध विधि भी है। यह एक ऐसी क्रमबद्ध विधि है जिसमें प्रशिक्षित प्रेक्षक मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण निष्पक्ष एवं अपूर्वाग्रहित भाव से करते हैं अर्थात् यहाँ व्यक्ति के व्यवहारों के दृश्य (visible) एवं श्रव्य (Audible) पक्षों को क्रमबद्ध ढंग से देख-सुन कर उसका रिकार्ड (record) तैयार किया जाता है। इसके बाद इसका विश्लेषण करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है। सचमुच में यहाँ प्रेक्षित व्यवहार (Observed behaviour) से विशेष अर्थ निकालने के लिए मनोवैज्ञानिक कुछ प्राक्कल्पनाओं (hypothesis) का निर्माण करते हैं और इन्हीं प्राक्कल्पनाओं के आधार पर यह तय किया जाता है कि उस असामान्य व्यवहार का उपचार किस उपागम या दृष्टिकोण से किया जाय। जैसे मान लिया जाय कि कोई मनोवैज्ञानिक यह प्रेक्षण करता है कि एक महिला दिन भर में करीब 80 से 100 बार तक अपना हाथ प्रतिदिन घोती है। अगर मनोवैज्ञानिक यह पाते हैं कि ऐसा व्यवहार कुछ विशेष अनुबंधन या सीखना (Conditioning or learning) का परिणाम है, तो वह इस कुसमायोजित व्यवहार को दूर करने के लिए प्रतिअनुबंधन (Countercoditioning) का सहारा लेगा। स्पष्टतः तत्र कहा जा सकता है कि प्रक्षेण विधि में सर्वप्रथम कुसमायोजित व्यवहार की पहचान की जाती है या वैसे व्यवहार की पहचान की जाती है

जिसे प्रेक्षण किया जाना है। इसके बाद उसकी आवृत्ति (बारंबारता) का प्रेक्षण किया जाता है। और तब उसके कारणों की व्याख्या कुछ सिद्धान्तों (दृष्टिकोणों) के तहत करके उपस्थित मनश्चिकित्सीय प्रविधियों में से किसी उपयुक्त प्रविधि का चयन किया जाता है।

प्रेक्षण प्रविधि के कई उपप्रकार हैं जिसका विभाजन कई कसौटियों के आधार पर किया गया है। जैसे प्रेक्षक की भूमिका के आधार पर इसके दो प्रकार हैं- सहभागी तथा असहभागी (Participant or non-participant observation), नियंत्रण के आधार पर भी इसके दो प्रकार हैं- नियंत्रित प्रेक्षण (Controlled observation) तथा अनियंत्रित प्रेक्षण (Uncontrolled observation), आदि-आदि ।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेक्षण एक ऐसी वैज्ञानिक प्रविधि है जिसमें प्रेक्षक प्राणियों (रोगियों) के व्यवहारों का प्रेक्षण एक विशिष्ट परिस्थिति में करके उनसे प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण कर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है।

प्रेक्षण प्रविधि का चाहे किसी भी प्रविधि का उपयोग क्यों न किया जाय, सभी के अपने-अपने कुछ विशिष्ट, लाभ तथा परिसीमाएँ हैं। इसके कुछ सामान्य लाभ निम्न हैं।

(i) इस प्रविधि में प्रेक्षक रोगियों के व्यवहारों का चूँकि प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षण कर आँकड़े संग्रहण करता है। अतः प्राप्त परिणाम काफी विश्वसनीय होते हैं।

(ii) प्रेक्षण विधि का कार्य क्षेत्र तुलनात्मक रूप से काफी बड़ा है क्योंकि इसके द्वारा साधारण तथा गंभीर दोनों ही तरह के रोगियों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाना सम्भव है।

(iii) इस प्रविधि में लचीलापन (Flexibility) का भी प्रर्याप्त गुण पाया जाता है क्योंकि यहाँ प्रेक्षण करने की विधि पूर्णतः परिभाषित नहीं होती है और प्रेक्षक परिस्थिति की माँग के अनुसार उसमें पर्याप्त परिवर्तन कर उसे अधिक उपयोगी एवं वैज्ञानिक बना लेता है।

(iv) इस प्रविधि द्वारा जो सूचनाएँ प्राप्त होती है वह काफी विस्तृत तथा अर्थपूर्ण होती है क्योंकि सामान्यतः प्रेक्षण की प्रक्रिया लम्बे समय तक चलती है।

इसके अलावा प्रेक्षण प्रविधि की कुछ कमजोरियाँ (दोष) भी हैं जो निम्नकित हैं।

(i) प्रेक्षण प्रविधि में वस्तुनिष्ठता की तुलना में आत्मनिष्ठता का समावेश अधिक रहता है। इसका मूल कारण यह है कि प्रेक्षक पहले से ही रोगियों के प्रति कुछ पूर्वाग्रह से ग्रस्त होते हैं जिससे इनका प्रेक्षण आत्मनिष्ठ हो जाता है।

(ii) प्रेक्षण प्रविधि की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक को प्रशिक्षित होना चाहिए। प्रायः देखा गया है कि प्रेक्षण का कार्य अप्रशिक्षित प्रेक्षक भी करने लगते है। परिणामतः इस विधि के दुरूपयोग होने की संभावना बढ़ जाती है।

(iii) इस प्रविधि के द्वारा प्राप्त परिणाम से कारण-प्रभाव सम्बंध (cause effect relationship) की स्थापना नहीं हो पाता है। अर्थात् प्रेक्षण के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि अमुक असामान्य व्यवहार का कारण अमुक कारक है। स्पष्ट हे कि प्रेक्षण से प्राप्त परिणाम मात्र वर्णात्मक स्वरूप (description nature) का होता है न कि व्याख्यात्मक (Explanatory) स्वरूप का ।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि असामान्य व्यवहार का अध्ययन करने के लिए प्रेक्षण प्रविधि एक प्रमुख प्रविधि है। परिस्थिति के माँगों के अनुसार इसके उपप्रकारों का उपभोग कर आँकड़े एकत्र किए जाते हैं। चूँकि इसके साथ कुछ कमजोरियाँ भी हैं अतः इसका उपयोग काफी सावधानीपूर्वक करना चाहिए ।

<u>इस इकाई में कई बिन्दुओं पर विचार किया गया है जिसका सारांश इस प्रकार है :</u>

(i) असमान्य मनोविज्ञान में नैदानिक केस अध्ययन विधि एक काफी लोकप्रिय विधि है। यह विधि भावमूलक शोध **(Idiographic reaserch)** पर आधृत है जिसमें मनोविज्ञानिक किसी व्यक्ति विशेष के असमान्य व्यवहार का गहन एवं ठोस अध्ययन करके किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इसमें व्यक्ति विशेष से कई तरह की सूचनाओं को एकत्रित करके उसका विलेषण किया जाता है और फिर किसी अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

(ii) प्रेक्षण विधि असमान्य मनोविज्ञान में व्यहत् होने वाली दूसरी प्रमुख विधि है। यह एक पुरातन विधि है जिसमें मनोवैज्ञानिक या प्रभिक्षित प्रेक्षक मानसिक क्षेत्र से ग्रस्त व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण अपूर्वाग्रहित भाव से करते हैं।